**SPECIMEN FORMAT FOR THESES OF MONTH**

| | | |
|---|---|---|
| Faculty | : | School of Arts & Social Sciences |
| Department | : | Hindi |
| Branch/ Area: | : | Hindi Literature |
| Sub Subject Heading: | : | - |
| Candidate's Name | : | Niraja T. K |
| Candidate's Address with email | : | Sreesoudham, Vellarvattom, Elamphazhanoor P.O Kadakkal, Kollam, Kerala<br>Email – kajarint1@gmail.com |
| Title of the thesis | : | A COMPARATIVE STUDY OF MYTHOLOGY IN THE NOVELS OF NARENDRA KOHLI AND AMISH TRIPATHI (WITH SPECIAL REFERENCE TO RAM KATHA SERIES) |
| (i) In Roman Script | | |
| (ii) In roman Script | | |
| Nomenclature of Degree: | : | Ph.D |
| Month & Year of Enrolment: | : | January, 2021 |
| Month & Year of Registration: | : | January, 2021 |
| Month &Year of Submission: | : | June. 2024 |
| Month &Year of Award | : | October, 2024 |
| Name of Supervisor | : | Dr. G. Shanthi |
| Designation of Supervisor | : | Professor |
| Centre/department/school in which research was conducted | : | Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women |
| University's Name & Address | : | Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women,Coimbatore – 43. |

**Abstract within 300 words:**

मिथक दुनिया के सबसे समृद्ध पौराणिक कहानियों का एक खज़ाना है । इसका अद्भुत एवं अनूठा पहलू यह है कि सभी लोग अपने देश या समाज के इन सदियों पुरानी कहानियों से पूर्ण रूप से परिचित है । इन कहानियों को हमे बचपन में सुनाया जाता है जो कल के लिए एक अच्छे नागरिक बनने के लिए हमारे व्यक्तित्व को आकार देता है । इसके साथ मिथक किसी व्यक्ति से संबंधित विरासत या संस्कृति का निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। मिथक और लोक कथाएँ लोगों की धर्मों का आधार बन जाती है जिनका वे सदियों से पालन करते आए हैं ।

मिथकीय कहानियों में जो बुराई और अच्छाई के बीच लड़ाई उल्लेखित है उससे हमें नैतिक मूल्य सीखने को मिलता है । मिथक पूर्वजों के लिए महत्वपूर्ण थी आज भी महत्वपूर्ण है और हमेशा , रहेगी। इसका प्रभाव इतना सशक्त है कि कई मानवीय तर्कों में भी मिथक का प्रतिबिंब छायांकित होता है । मिथक को महत्वपूर्ण मानने के पीछे का सबसे मुख्य कारण यह है कि यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कुछ वास्तविक तथ्य शामिल है । एक ही मिथक में विश्वास करने वाले लोगों के बीच कभीकभी एकता भी होता है- । इनमें मतभेद होने की संभावना कम दिखाई देता है । मिथक को अपने आप में यथार्थ माना जाता है जो मनुष्य के अंदर कृतज्ञ एवं आशा की भावना को जगाती है । इसी कारण से मिथक का मनुष्य पर प्रभाव के संबंध में तार्किक रूप से वर्णन करना कठिन है । मिथकीय साहित्य के लेखन में विभिन्न रचनाकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनमे नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के मिथकीय उपन्यासों पर मैंने शोध कार्य किया है ।

I. **Major objectives** :

- **I.** नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित रामचंद्र की कथा श्रृंखला की तुलना करना।
- **II.** दोनों लेखकों के मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य - वैषम्य को समझना।
- **III.** पारंपरिक राम कथा और इन लेखकों की राम कथा में अंतर का अध्ययन करना।
- **IV.** दोनों लेखकों की राम कथा की प्रासंगिकता को उजागर करना।

II. **Hypothesis**:

नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में पौराणिक कथाओं का प्रयोग हिंदू आख्यानों की विशिष्ट सांस्कृतिक और दार्शनिक व्याख्याओं को दर्शाता है, जिसमें कोहली पारंपरिक मूल्यों पर जोर देते हैं और त्रिपाठी आधुनिक संवेदनाओं को शामिल करते हैं।

III. **Methodology** :

- ✓ विषय चयन
- ✓ अनुसंधान की रूपरेखा
- ✓ सामग्री संकलन
- ✓ संबंधित साहित्य की समीक्षा
- ✓ नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित रामचंद्र की कथा श्रृंखला का तुलनात्मक अध्ययन
- ✓ आधुनिक सन्दर्भ में मिथकीय साहित्य का महत्व
- ✓ उपसंहार
- ✓ इस विषय पर भविष्य में शोध की संभावनाएँ
- ✓ संदर्भ ग्रन्थ सूची

**V. Findings:**

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने भारतीय मिथक के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है । दोनों लेखकों ने रामायण का समसमायिक चित्रण कर समकालीन विश्व में पौराणिक कथाओं की प्रासंगिकता को वापस ले आए हैं ।

मैंने अपने शोध कार्य में नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित राम कथा श्रृंखला का तुलनात्मक अध्ययन किया है । इनकी तुलना करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि दोनों लेखकों के राम कथा श्रृंखला के प्रकाशन के बीच बहुत बड़ी समय का अंतराल है । इसके बावजूद भी इनमें आश्चर्यजनक रूप से समानताएँ पायी जाती हैं । इसमें कई सूक्ष्म अंतर भी हैं जैसे -

- ❖ अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला में विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो शत्रुता है, इसका प्रभाव अन्य पात्रों के जीवन पर भी पड़ता है, किंतु कोहली जी की अभ्युदय में इसका केवल एक प्रसंग में उल्लेख हुआ है । विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो मतभेद है, वह किसी पात्र के चरित्र पर या कथा की प्रवाह पर किसी तरह का प्रभाव नहीं डालता।
- ❖ कोहली जी एवं अमीश जी ने रामायण के पात्रों के बीच के संबंध को अलग रूप से देखा है । कोहली जी के लक्ष्मण अपने भाई भरत पर भरोसा नहीं कर पाता, वह दूसरी तरफ अमीश जी की राम कथा में रावण और सीता के बीच भी अंत में मित्रता की भावना जागती है ।
- ❖ नरेंद्र कोहली ने कहीं भी पुष्पक विमान का उल्लेख नहीं किया और अमीश जी ने पुष्पक विमान जैसा जादुई तत्व को हटाकर वैज्ञानिक रूप से समझाया है । इन दोनों के यह दृष्टिकोण आज की पीढ़ी के साथ मेल खाता है ।

- राम का चित्रण सिर्फ धैर्यवान पात्र के रूप में नहीं हुआ है, उनके भावनात्मक पक्ष को भी दिखाया है । सीता को एक मज़बूत स्त्री पात्र के रूप में दिखाया है जो कोहली जी की राम कथा में इंद्र पुत्र जयंत से आत्मरक्षा के लिए अकेली लडती हैअमीश जी के राम कथा में एक देश को संभालती , हुईराजनीतज्ञ के रूप में चित्रित हुआ है जो आधुनिक महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक छवि का प्रतिनिधित्व करती है । अमीश जी ने खलनायक रावण को भी, बल्कि एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में दिखाया है, जो आज की दुनिया के लिए एक सबक पेश करता है । .....
- नरेंद्र कोहली ने राम को एक ऐसे राजकुमार के रूप में चित्रित किया है जो उत्पीड़ित जनता, श्रमिक वर्ग और प्रताड़ित दलित महिलाओं की अधिकार उनकी स्वतंत्रता और बेहतर जीवन स्थितियों के लिए लड़ते हैं । दूसरी ओर, अमीश त्रिपाठी के राम, अपराध विभाग की उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेते हैं । कानून और व्यवस्था को सख्ती से लागू करने के माध्यम से अयोध्या में अपराध दर को काफी कम करते हैं, जिससे अयोध्या में शाँति और संतुष्टि आती है ।
- अमीश त्रिपाठी के रावण एक बच्ची को वेश्यावृत्ति में धकेले जाने से बचाते है, जो रामायण कथा में एक नया आयाम जोड़ता है । यह चित्रण रावण के मानवीय पहलू को उजागर करता है, जिसे पारंपरिक रूप से भारतीय महाकाव्यों में एक सकारात्मक पात्र के रूप में दर्शाया गया है । यौन शोषण जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उनके रुख को प्रदर्शित करके, अमीश जी इस प्रतिष्ठित चरित्र पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो खलनायक के रूप में उनके सामान्य चित्रण से परे हैं ।
- नरेंद्र कोहली की रामायण प्रस्तुति में, सीता की बहन और लक्ष्मण की पत्नी, उर्मिला का उल्लेख नहीं हुआ है । कोहली जी का लक्ष्य संभवत लक्ष्मण के :चौदह साल के जंगल में वनवास के दौरान अयोध्या में अपना जीवन छोड़ने के अतिरिक्त बोझ या अपराध बोध के बिना सेवा करने के समर्पण को चित्रित करना था।

रामायण के हर पात्रों के चरित्र हमें कुछ न कुछ सबक देते हैं । वाल्मीकि जी के रामायण हमें यह सिखाते हैं कि राम जैसे पूजनीय व्यक्ति में भी खामियाँ हो सकती हैं । इसके बावजूद, राम शाँत रहते हैं, कभी निराशा के आगे नहीं झुकते या भाग्य को दोष नहीं देते। सीता एक साहसी महिला के रूप में उभरती हैं, जो एक कर्तव्यपरायण पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए महल के आराम को स्वेच्छा से त्याग देती है, और रावण द्वारा अपहरण किए जाने पर धैर्यपूर्वक अपनी आत्मरक्षा करती है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने रामायण कथा के भीतर नई प्रसंगों को गढ़ते हुए कुशलतापूर्वक वाल्मिकी रामायण के प्रत्येक चरित्र के सार को भी बनाए रखा हैं । रामायण के पात्रों के जीवन में नए संदर्भों को लाने के बावजूद, इन लेखकों ने यह सुनिश्चित किया हैं कि पात्रों के मूल व्यक्तित्व अपरिवर्तित रहें।

भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन में निहित सांस्कृतिक विरासत का सार, भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण नींव रखता है । पौराणिक संतों की विरासत, आत्मा की अमरता में विश्वास और गहरी धार्मिक और दार्शनिक समझ इसका मूल है । जैसा कि हम एक आशाजनक भविष्य के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह ज़रूरी है कि अतीत की उपेक्षा न करें, क्योंकि यह हमारे कल को आकार देता है । दुख की बात है कि प्रगति की हमारी खोज में, सांस्कृतिक विरासत के महत्व को अक्सर भविष्य के बारे में चर्चाओं में नजरअंदाज कर दिया जाता है, चाहे वह आर्थिक संदर्भ में हो या सामाजिक संदर्भ में। इन सांस्कृतिक जड़ों को संरक्षित करना और उन्हें अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप से ले जाना एक उत्तरदायित्व है, जिसे नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने निभाया है ।

## VI. Examiners

**Internal Examiner :** Dr. Geetha Nayak
Professor, Department of Hindi
Vikram Vishwavidhyalaya
Ujjain, Madhya Pradesh
456010

**External Examiner :** Dr. Sanjay. L. Madar
Professor & Head
Post Graduate & Research institute
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Ernakulam, Kerala